भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर
Indian Institute of Technology Bhubaneswar

Press Release

नवाचार, उद्यमिता और वैश्विक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए रघुराजपुर में "पट्टचित्र चित्रकला में मूल्य संवर्धन" पर कार्यशाला आयोजित

भुवनेश्वर, 4 मार्च 2025: अपनी जटिल पट्टचित्र पेंटिंग के लिए मशहूर रघुराजपुर के प्रसिद्ध विरासत गांव में कार्यशाला "पट्टचित्र पेंटिंग में मूल्य संवर्धन" के साथ एक प्रेरणादायक परिवर्तन देखने को मिला। इस सदियों पुरानी कला में नवीनता लाने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम को वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओडीओपी) इन्वेस्ट इंडिया, डीपीआईआईटी द्वारा प्रायोजित किया गया था और रिसर्च एंड एंटरप्रेन्योरशिप पार्क, आईआईटी भुवनेश्वर और निफ्ट भुवनेश्वर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था।
कार्यशाला में पारंपरिक स्क्रॉल और कैनवस से परे पट्टचित्र को आधुनिक बनाने और विविधता लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया, ताकि इसे वस्त्र, गृह सज्जा, फैशन के सामान और जीवन शैली के उत्पादों में एकीकृत किया जा सके। विशेषज्ञ और कारीगर इस बात पर विचार करने के लिए एक साथ आए कि कैसे समकालीन सौंदर्यशास्त्र को पारंपरिक शिल्प कौशल के साथ मिश्रित किया जा सकता है ताकि वैश्विक बाजारों में इसकी अपील को बढ़ाया जा सके।

इस अवसर पर बोलते हुए, आईआईटी भुवनेश्वर के निदेशक प्रो. श्रीपद कर्मालकर ने कहा कि इस कार्यक्रम को प्रतिभाशाली स्थानीय कारीगरों को उनके काम में विविधता लाने और इन उत्पादों को अभिनव तरीकों से विपणन करने की जानकारी प्रदान करके उनकी कला और उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। उन्होंने कहा, "आईआईटी भुवनेश्वर और निफ्ट भुवनेश्वर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया यह प्रयास कलाकारों को बिचौलियों के हस्तक्षेप के बिना राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों तक पहुँचने और उनके व्यावसायिक कौशल को बढ़ाने में मदद करेगा।" उन्होंने यह भी कहा कि आईआईटी भुवनेश्वर और इसका अनुसंधान और उद्यमिता पार्क ओडिशा में नवाचार को बढ़ावा देने और एक उद्यमी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की दिशा में कई पहल कर रहा है।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. नरेश चंद्र साहू ने पट्टचित्र की प्रामाणिकता को बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया, साथ ही इसके विषयों और अनुप्रयोगों को अंतर्राष्ट्रीय उपभोक्ताओं के साथ तालमेल बिठाने के लिए अनुकूलित किया। उन्होंने पारंपरिक कला को टिकाऊ व्यावसायिक उपक्रमों में बदलने में उद्यमशीलता और स्टार्टअप की क्षमता पर प्रकाश डाला, कारीगरों से नवाचार को अपनाने, नए बाजारों की खोज करने और स्केलेबल बिजनेस मॉडल विकसित करने का आग्रह किया। वैश्विक रुझानों को समझकर और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म अपनाकर, कारीगर पट्टचित्र को एक प्रतिस्पर्धी रचनात्मक

उद्योग के रूप में स्थापित कर सकते हैं, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा।

इस कार्यक्रम में पारंपरिक कलाओं को प्रासंगिक बनाए रखने में अनुकूलन और रचनात्मकता की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला गया। एक लाइव प्रदर्शन सत्र में लकड़ी की कलाकृतियों, आभूषणों, धूप के चश्मे, पेपर-मैचे, गाय के गोबर की कलाकृतियों, साड़ियों और दुपट्टों सहित विभिन्न माध्यमों पर पट्टचित्र के अनुप्रयोग को प्रदर्शित किया गया। व्यावहारिक अनुभव ने कारीगरों को अपने शिल्प को इसके पारंपरिक स्वरूपों से परे विस्तारित करने के लिए व्यावहारिक कौशल प्रदान किया।

प्रोफेसर सुस्मिता बेहरा और मानस साहू ने अंतर्राष्ट्रीय बाजारों के लिए डिजाइन संशोधनों पर जानकारीपूर्ण सत्रों का नेतृत्व किया, जिसमें दुनिया भर में विविध सांस्कृतिक और सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं के साथ संरेखित करने के लिए रंग अनुकूलन, विषयगत विविधताओं और समकालीन उत्पाद डिजाइनों पर चर्चा की गई।

कार्यशाला के समापन पर, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. संतोष तराई ने समापन सत्र के दौरान हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन दिया तथा पट्टचित्र की कलात्मक और आर्थिक क्षमता को पुनः परिभाषित करने के लिए सामूहिक प्रयासों की सराहना की।

कार्यशाला ने नवाचार, उद्यमशीलता और वैश्विक बाजार एकीकरण के माध्यम से पट्टचित्र को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। कलाकारों को आधुनिक डिजाइन अंतर्दृष्टि, स्टार्टअप रणनीतियों और बाजार-संचालित दृष्टिकोणों से लैस करके, इस पहल का उद्देश्य विरासत कला रूप को एक गतिशील, विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त शिल्प में बदलना है, जिससे भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसकी स्थिरता और आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित हो सके।